

**DR.MALA KUMARI**  
**ASSISTANT PROFESSOR (GUEST**  
**TEACHER)**  
**DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY**  
**A.N.D COLLEGE SHAHPUR**  
**PATORY,SAMASTIPUR**  
**B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)**  
**PAPER-1 ,UNIT-10,**  
**THINKING AND IMAGINATION**  
**LECTURE-81**

**चिन्तन एवं कल्पना**

**(THINKING AND IMAGINATION )**

चिन्तन तथा कल्पना दोनों ही उच्चतर मानसिक प्रक्रियाएँ हैं ।

रेबर ने कल्पना को परिभाषित करते हुए कहा है कि “गत अनुभूतियों की यादों और गत प्रतिभाओं को पुनर्गठित कर एक नयी संरचना करने की प्रक्रिया को कल्पना कहा जाता है ।” इस परिभाषा से यह स्पष्ट है कि कल्पना एक ऐसा मानसिक प्रक्रिया है जिसमें पूर्व अनुभूति के आधार पर व्यक्ति कुछ नये विचार को सामने प्रस्तुत करता है जिसे वह वास्तव में दुसरे

व्यक्तियों से प्राप्त किये होता है तो इस तरह की कल्पना को अनुकृत कल्पना कहा जाता है ।

चिन्तन भी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने गत अनुभूतियों का सहारा लेता है और इस बिंदु पर चिन्तन तथा कल्पना दोनों ही प्रक्रियाएँ सामान है । इस समानता के बावजूद भी चिन्तन तथा कल्पना की प्रक्रिया एक – दुसरे से निम्नांकित अर्थों में भिन्न है –

- (i) चिन्तन की प्रक्रिया लक्ष्य – निर्देशित होता है । जब हमारे सामने कोई समस्या आती है तो हम उसके समाधान के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं और चिन्तन करना शुरू कर देते हैं । चिन्तन के समय व्यक्ति का सारा प्रयास एक निश्चित लक्ष्य यानी ,उस समस्या के समाधान की ओर होता है । कल्पना में ऐसी बातें नहीं होती है । कल्पना करते समय हमारे सामने कोई निश्चित या अनिश्चित समस्या नहीं होती है । फलस्वरूप हमारा प्रयास किसी खास समस्या या लक्ष्य की ओर नहीं होता है । प्रायः यही देखा गया है कि कल्पना करते समय व्यक्ति भिन्न – भिन्न वस्तुओं

एवं घटनाओं से संबंधित विचार अपने में यादृच्छिक रूप से लाता है ।

- (ii) चिंतन में खासकर यथार्थवादी चिंतन में तर्क होता है परन्तु कल्पना में सही अर्थ में कोई तर्क नहीं होता है। चिंतन करते समय व्यक्ति किसी विषय या घटना के पक्ष या विपक्ष में तर्क करता है । उदाहरणार्थ ,कोई छात्र अपने कमरे में टेबुल लैम्प की रोशनी में पढ़ रहा है । अचानक रोशनी बुझ जाती है । अब छात्र के सामने यह समस्या उठ खड़ी होती है की रोशनी कहाँ से आये की पढ़ाई जारी रखी जा सके । छात्र अपने मन में कई तरह के तर्क करते हुए चिंतन कर सकता है । वह सोच सकता है की संभवतः बिजली के मीटर के बगल का फ्यूज तार जल गया हो । फिर वह सोच सकता है की चूँकि बगल के कमरे का बल्ब जल रहा है ,अतः जरूर ही लैम्प का बल्ब फ्यूज कर गया होगा । अतः छात्र बल्ब की जांच करेगा और उसके बाद यदि वह यह पाता है की बल्ब भी ठीक है तो स्पष्टतः वह इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा की टेबुल लैम्प का स्विच खराब हो गया है । इस उदाहरण से यह स्पष्ट है की चिंतन में क्रमबद्ध रूप से व्यक्ति तर्क करता है । कल्पना में

ऐसी बात नहीं होती है |कल्पना में कभी एक वस्तु से सम्बंधित प्रतिमाएँ या पूर्व अनुभूतियाँ मन में आती है तो कभी दुसरे वस्तु से सम्बन्धित प्रतिमाएँ या पूर्व आनुभूतियाँ | इसमें कोई क्रमबद्धता तथा तर्क सम्मिलित नहीं होता है |

(iii) प्रायः चिंतन का संबंध वास्तविकता से होता है ,किन्तु कल्पना का संबंध वास्तविक चीजों,वस्तुओं एवं घटनाओं से कम तथा अवास्तविक चीजों या वस्तुओं से अधिक होता है |

(iv) चिंतन में प्रयत्न तथा त्रुटी की प्रक्रिया होती है |किन्तु कल्पना में प्रयत्न तथा त्रुटी की प्रक्रिया नहीं होती है क्योंकि इसका सम्बन्ध किसी समस्या से नहीं होता है|

(v) चिंतन में स्पष्ट रूप से कोई-न-कोई समस्या होती है | परन्तु कल्पना के साथ ऐसी बात नहीं होती है |कल्पना का सम्बन्ध किसी समस्या से नहीं होता है | हम चुपचाप बैठे रहते है |हमारे सामने कोई समस्या नहीं होती है ,फिर भी हम कुछ-न-कुछ कल्पना करते रहते है |